RESEARCH PAPER | Sociology | Volume : 3 | Issue : 1 | January 2013 | ISSN - 2249-555X

Hindi Sahitya Ki Dharohar Shanskrutik Chetna

KEYWORDS

Anil. M. Makadiya

Prof. Dept. Of Hindi, Government Arts College, Ranavav, Porbandar

ABSTRACT संस्कृति का साहित्य से घनिष्ठ संबंध है । सामाजिक विकास के साथ-साथ साहित्य की वुद्धिहोती है और साहित्य का विकास समाज और संस्कृति को गति प्रदान करता है एवं उसे संस्कारित करता है । हिन्दी साहित्य में आदिकाल से उतर आधुनिक काल तक देखे तो अनेक साहित्यकारों ने साहित्य की रचना की जिसमें समाज में व्याप्त विसंगतियों का चित्रण किया गया, उस विसंगतियों को दुर करने के लिए विविध आदर्शों की स्थापना हुई । साथ साथ कहानी, नाटक, उपन्यास, निबंध, कविता आदि के माध्यम से भारतीय सभ्यता और संस्कृति को बचाने का प्रयास किया गया । और उसेसाहित्य के माध्यम से उजागर किया गया । भारतीय संस्कृति और सभ्यता सदैव 'वसुधैव कुटुम्बकम्' की पोषक रही है । अहिंसा उसकामूल मंतत्व रहा है । हिन्दी साहित्य ने इसी बात को पोषकत्व दिया । इसीलिए हिन्दी साहित्य में 'गोरस बेचन हरि मिलन', 'एक पंथ दो काज' आदि मुहावरे है । और गोमुखी, गोपुच्छ, गोधूलि-बेला,गोस्वामी आदि शब्द हमारी सांस्कृतिक सभ्यता की रक्षा करते हुए और गाय को माता स्विकार करते हुए उसकी प्रधानता के द्योतक है । ऐसे अनेक सांस्कृतिक तत्व है जिनका प्रभाव हिन्दी साहित्य पर पडा । और हिन्दी साहित्यकारों ने अपने साहित्य के माध्यम से सांस्कृतिक उत्थान को बचाये रखा ।

संस्कृति का साहित्य से घनिष्ठ संबंध है । सामाजिक विकास के साथ-साथ साहित्य की वृद्धिहोती है और साहित्य का विकास समाज और संस्कृति को गति प्रदान करता है एवं उसे संस्कारित करता है । साहित्य समाज और संस्कृति की गतिशील प्रक्रियाओं का अंकन, लेखन व चित्रण है । साहित्य और संस्कृति की विवेचना केवल अभिव्यंजनापक्ष, शब्दार्थ के समभाव रसपक्ष को लेकर नहीकी जा सकती, उसकी सामाजिक प्रेरणा और सामाजिक उपयोगिता पर भी विचार करना आवश्यक होजाता है । साहित्य समाज के व्यक्तियों का नैतिक व मानसिक विकास करके उसे संस्कारवान बनाता है । साहित्य में बड़ी शक्ति होती है, वह युग परिवर्तन की क्षमता रखता है । राष्ट्र पर विपति आने परसाहित्य उसमें जोश भरता है । इस प्रकार समाज और संस्कृति के परिवर्तन में साहित्य की अहम भूमिका रही है । हम यहाँ पर हिन्दी साहित्य में सांस्कृतिक चेतना पर अधिक द्रष्टिपात करेंगे ।

हिन्दी साहित्य में सांस्कृतिक चेतना को हमें प्रतिबिम्बित करना है, तो सौ प्रथम तो हमें हिन्दी साहित्य की प्रारंभिक अवस्था को देखना होगा । हिन्दी का विकास संस्कृत में से हुवा और वही संस्कृत की संस्कृति हिन्दी साहित्य में प्रतिबिंम्बित हुई । वैदिक साहित्य, लौकिक साहित्य, बौद्ध साहित्य, जैन साहित्य, भक्तिकालीन साहित्य, रीतिकालीन साहित्य आधुनिक साहित्य और उतर आधुनिक साहित्य इस विकास क्रम में हम हिन्दी साहित्य में सांस्कृतिक चेतना की पहचान कर सकतेहै ।

आदिकाल से शुरुआत करे तो उस समय बौद्धों और ब्राह्मणों के बीच एक खाई बन गई थी, वह आपस में लडते रहे उसके संदर्भ में बालकृष्ण भट्ट अपने निबंध 'साहित्य जनसमूह के हृदय का विकास है' में कहते है कि नि:संदेह तांत्रिकों की कृपा न होती तो हिन्दुस्तान ऐसा जल्द न डूबता । इनतंत्रो के प्रभाव के कारण ही हिन्दु धर्म, शैव, शाक्त, वैष्णव, जैन, बौद्ध आदि अनेक विभागों में विभक्त हो गया । और तब से सांस्कृतिक पतन का प्रारंभ हुवा ।

भक्तिकाल तक आते-आते समाज में बहुत विभिन्नता व्याप्त हो गई । मुगलों का प्रभाव भारत पर जम गया । मंदिरों, मूर्तियों को तोडा जा रहा था । समाज में उँच-नीच, वर्ग विभेद, पाखन्ड अपनेउत्कर्ष पर था । आम जनता त्रस्त थी । इस समय तुलसी, सूर, कबीर, नानक आदि संत कवियों का आगमन हुआ । इनभक्त कवियों ने समाज की दुर्दशा का वर्णन अपने साहित्य में पूरी इमानदारी से किया और सांस्कृतिक उत्थान की नीव डाली ।

भक्तिकालीन समाज में सामाजिक स्थिति का चित्रण तुलसी साहित्य में बखूबी हुआ है । समाज में व्याप्त जाँति-पाँति व्यवस्था के विरोध में वे कहते है,

धूत कहौ, अवधूत कहौ, रजपूत कहौ, जुलही कहौ करु ।
काहू की बेटी सो बेटा न ब्याहब काहू की जाति बिगार न सोऊ ॥

तुलसीदास ने 'रामचरित मानस' में भी हमारी भारतीय संस्कृति के उच्च उच्च आदर्शो को प्रस्थापित किया है ।

उस समय की आम जनता त्रस्त थी, किसान भूखे मर रहे थे, व्यापार नष्ट हो गया था, प्लेग जैसी महामारी उस समय फैली थी । समाज की दरिद्रता का चित्रण भी तुलसी ने कवितावली में किया,

''खेती न किसान को भिखारी को न भीख बति बनिक को बनिज न चाकर को चाकरी ॥''
इसी प्रकार कबीर, नानक, दादू जैसे कई संत कवियों ने समाज में व्याप्त विसंगतियों का चित्रण साहित्य के माध्यम से किया और लागों में सांस्कृतिक उत्थान के बीज बोये । कबीर ने भी हिन्दु मुस्लिम में फैले वैमनस्य को दूर करने का प्रयास किया । और सर्वधर्म समभाव की हमारी प्राचीन सभ्यता को उजागर किया ।

इसके पश्चात रीतिकाल आते-आते राजा विलासी हो लए, जिसका चित्रण हमें रीतिक् ालीन साहित्य में दिखाई पड़ता है । विलासी राजाओं को खुश करने के लिए कवियों ने श्रृंगारपरक रचनाओं के ढेर लगा दिए । बिहारी, देव, मतिराम, केशव आदि अनेक कवियों ने राजा की श्रृंगारिक प्रवृतियों कोखूब जगाया । तो कुछ आचार्यो ने नैतिकता के संदर्भ में भी काव्य की रचना की ।

इसके बाद का समय अंग्रेजों का रहा । भारतेन्दु का अवरण इस समय की महत्वपूर्ण घटना थी । उन्होंने साहित्य के माध्यम से लोंगों को जागृत किया । जयशंकर प्रसाद मैथि्ल ीशरण गुप्त जैसे अनेक कवियों ने भारत की दुर्दशा का चित्रण किया । जयशंकर प्रसाद ने भारतीय गौरव को पुनः स्थापित करने एवं नारी के सम्मान की रक्षा के लिए चन्द्रगुप्त, धृवस्वामिनी, जैसे नाटकों की रचना की। प्रेमचंद ने अपने उपन्यासों द्वारा भारतीय सभ्यता का चित्रण किया ।

स्वतंत्रता के पश्चात भारत को विभाजन का दर्द सहन करना पडा । जैसे-तैसे भारत विभाजन की त्रासदी से उभरा कि भारत का राजनीतिक परिद्रश्य बदलने लगा । इसने अनेक जातीय समीकरणो, धार्मिक समाकरणो, भाषायी समाकरणों को जन्म दिया । प्रांतवाद का जहर फैला । उसे साहित्यकारोंने अपने साहित्यमें स्थान दिया । और उसे मिटाने का प्रयास किया ।

स्वतंत्रता के बाद सामाजिक परिस्थितियाँ भी तेजी से बदल रही थीं । अंग्रेजी साहित्य एवं संस्कृति का प्रभाव भी भारत में बढा । लोग अंग्रेजी सभ्यता को बिना सोचे समझे तेजी से अपनाने लगे । फलतः आम जनता को कुछ नवीन समस्याओं का सामना करना पड रहा था । पारीवारिक टूटन अलगाव, घुटन, त्रासदी, अजनबीपन, विडम्बना न जाने क्या-क्या । निराशा और आशा के मध्य झूलते लोगों की आवाज को साहित्य ने पहचाना, फलतः निराला, पंत, महादेवी वर्मा, रामचन्द्रन शुक्ल, हजारी प्रसाद द्विवेदी, अज्ञेय, इलाचन्द्र जोशी, जैनेन्द्र जैसे अनेक साहित्यकारों ने अपने साहित्यमें आम जनता की पीडाओं को उठाया और भारतीय सांस्कृतिक सभ्यता की रक्षा की ।

भारतीय संस्कृति और सदैव 'वसुधैव कुटुम्बकम्' की पोषक रही है । अहिंसा उसका मूल मंतव्य रहा है । हिन्दी साहित्य में अनेक ऐसे शब्द, मुहावरे, लोकोक्तियाँ मिलती है जिनका सीधा संबंध भारतीय संस्कृति और सभ्यता से है । गाय हमारे यहाँ माता के समान है, पूजनीय, वंदनीय है ।गोधूलि-बेला, गोष्ठी, गवेषणा, गोमुखी, गोपुच्छ, गोस्वामी जैसे शब्दों का बाहुल्य हमारे समाज में गौ की प्रधानता का द्योतक है । भारत गरम देश है । अतः हिन्दी साहित्य में 'हृदय को शीतल करना' मुहावरा है । भारतीय संस्कृति अहिंसा में विश्वास करती है तो इसीलिए 'एक पत्थर से दो पंछी मारना', 'गोरस बेचन हरि मिलन', 'एक पंथदो काज' आदि मुहावरे अहिंसात्मक प्रवृति का द्योतक है ।

ऐसे अनेक सांस्कृतिक तत्व है जिनका प्रभाव हिन्दी साहित्य पर पडा और आगे भी पडता रहेगा । हिन्दी साहित्यकारों ने अपनी संस्कृति की रक्षा के लिए और उसे सर्वत्र व्याप्त करने के उदेश्यसे ही साहित्य लिखा । यह परंपरा हंमेशा चलती रहे और साहित्य संस्कृति से जुडा रहे यही साहित्य की उत्कृष्ठता है । इन्ही कारणों और आज के समाज की आवश्यक्ता को देखते हुए संस्कृति ही भारतीय युवाधन, साहित्य और समाज को बचाने का एकमात्र उपाय है । इसी लिए संस्कृति हमारे देश की और साहित्यकी अनिवार्य धरोहर है ।

अस्तु ।